“हरि का मदिर”

(इस सत्य की व्याख्या करने वाली पहली अक्षरीय बाणी - गुरबाणी)

1. हरि मंदर एहु सरीर है - गिआन रतन परगट होइ । मनमुख मूल न जाणनी - माणस हरि मंदर न होइ ।

अर्थः- हे भाई ! (मनुष्य का) यह शरीर ‘हरि-मदिर’ है (पर, यह भेद सतिगुरु की बख्शी) आत्मिक जीवन की कीमती सूझ से ही खुलता है । अपने मन के पीछे चलने वाले जगत के मूल परमात्मा के साथ सांझ नहीं डालते इसलिए वे समझते हैं कि मनुष्य के अंदर ‘हरि-मन्दिर’ नहीं हो सकता ।

गुर परसादी वेख तू - हरि मंदर तेरै नाल । हरि मंदर सबदे खोजीऐ - हरि नामो लेहु सम्हाल ।

अर्थः- हे भाई ! तू गुरु की कृपा से देख, परमात्मा का घर तेरे साथ है - तेरे अंदर ही है । इस 'हरि-मन्दिर' को गुरु के शब्द से ही पाया जा सकता है, हे भाई ! गुरु के शब्द में जुड़, और परमात्मा का नाम अपने अंदर संभाल के रख ।

मन मेरे सबद रपै रंग होइ । सची भगत सचा हरि मंदर - प्रगटी साची सोइ ।

अर्थः- हे मेरे मन ! (जो मनुष्य गुरु के) शब्द में रंगा जाता है (उसके मन को परमात्मा की भक्ति का) रंग चढ़ जाता है । उसको सदा-स्थिर प्रभु की भक्ति प्राप्त हो जाती है, उसकी शोभा सदा के लिए (लोक-परलोक में) बिखर जाती है । (उस मनुष्य का शरीर) परमात्मा का कभी ना डोलने वाला घर बन जाता है (उसका शरीर ऐसा 'हरि-मन्दिर' बन जाता है जिसको विकारों की अंधेरी उड़ा नहीं सकती) ।

हरि मंदर हरि जीउ साजिआ - रखिआ हुकम सवार । धुरि लेख लिखिआ सु कमावणा - कोइ न मेटणहार ।

अर्थः- हे भाई ! (ये मनुष्य का शरीर) 'हरि-मन्दिर' प्रभु जी ने स्वयं बनाया है (और अपनी) आज्ञा से सजा रखा है । धुर-दरगाह से हरेक मनुष्य के किए कर्मों के अनुसार जो लेख हरेक शरीर-हरि-मन्दिर में लिखा जाता है उस लेख के अनुसार हरेक प्राणी को चलना पड़ता है । कोई मनुष्य अपने किसी उद्यम से उस लेख को मिटाने के काबिल नहीं है ।

सबद चीन्ह सुख पाइआ - सचै नाइ पिआर । हरि मंदर सबदे सोहणा - कंचन कोट अपार ।

अर्थः- हे भाई ! (गुरु के शब्द से) सदा-स्थिर-हरि-नाम से (जिस मनुष्य ने) प्यार किया, उसने गुरु के शब्द के साथ सांझ डाल के आत्मिक आनंद प्राप्त किया । उस मनुष्य का शरीर हरि-मन्दिर गुरु के शब्द की इनायत से सुंदर बन गया, वह हरि-मन्दिर बेअंत प्रभु के निवास के लिए (जैसे) सोने का किला बन गया ।

हरि मंदर एहु जगत है - गुर बिन घोरंधार । दूजा भाउ कर पूजदे - मनमुख अंध गवार ।

अर्थः- हे भाई ! ये सारा संसार भी 'हरि-मन्दिर' ही है - परमात्मा के रहने का घर है । पर गुरु (की शरण) के बिना (आत्मिक जीवन की ओर से) घोर अंधकार बना रहता है (और, जीवों को इस भेद की समझ नहीं पड़ती) । अपने मन के पीछे चलने वाले मनुष्य, आत्मिक जीवन की ओर से अंधे होए हुए मूर्ख मनुष्य (परमात्मा के बिना) औरों से प्यार डाल के उसको पूजते-सत्कारते रहते हैं ।

जिथै लेखा मंगीऐ - तिथै देह जात न जाइ । साच रते से उबरे - दुखीए दूजै भाइ ।

अर्थः- हे भाई ! जहाँ (परमात्मा की दरगाह में मनुष्य से उसके किए कर्मों का) हिसाब माँगा जाता है वहाँ (मनुष्य के साथ) ना (यह) शरीर जाता है ना (ऊँची-नीची) जाति जाती है । (जो मनुष्य) सदा-स्थिर हरि-नाम में रंगे रहते हैं, वे (वहाँ लेखा होने के वक्त) सही स्वीकार

हो जाते हैं, (जो) माया के प्यार में (ही जिंदगी के दिन गुजार जाते हैं, वे वहाँ) दुखी होते हैं ।

हरि मंदर मह नाम निधान है - ना बूझह मुगध गवार । गुर परसादी चीन्हिआ - हरि राखिआ उर धार ।

अर्थः- हे भाई ! इस शरीर - 'हरि-मन्दिर' में परमात्मा का नाम (मनुष्य के लिए) खजाना है, पर मूर्ख लोग (ये बात) नहीं समझते । जिन्होंने गुरु की कृपा से (ये भेद) समझ लिया, उन्होंने परमात्मा का नाम अपने हृदय में संभाल के रख लिया ।

गुर की बाणी गुर ते जाती - ज सबद रते रंग लाइ । पवित पावन से जन निरमल - हरि कै नाम समाइ ।

अर्थः- हे भाई ! जो मनुष्य गुरु के माध्यम से परमात्मा के संग प्यार बना के गुरु के शब्द में रंगे रहते हैं, वे मनुष्य गुरु से गुरु की वाणी (की कद्र) समझ लेते हैं । वे मनुष्य परमात्मा के नाम में लीन रह के स्वच्छ पवित्र जीवन वाले बन जाते हैं ।

हरि मंदर हरि का हाट है - रखिआ सबद सवार । तिस विच सउदा एक नाम - गुरमुख लैन सवार ।

अर्थः- हे भाई ! यह मनुष्य का शरीर 'हरि-मन्दिर' परमात्मा के नाम-सौदे की हाट है, इस (हाट) को गुरु शब्द की इनायत से सजा कर रखा जा सकता है । इस (शरीर हाट) में परमात्मा का नाम-सौदा (मिल सकता) है । (पर, सिर्फ) गुरु के सन्मुख रहने वाले मनुष्य (ही अपने जीवन को) सुंदर बना के (ये सौदा) लेते हैं ।

हरि मंदर मह मन लोहट है - मोहिआ दूजै भाइ । पारस भेटिऐ कंचन भइआ - कीमत कही न जाइ ।

अर्थः- हे भाई ! (जो मनुष्य) माया के मोह में फंस के आत्मिक जीवन की राशि-पूंजी लुटा बैठता हैं, उसका मन इस शरीर - 'हरि-मन्दिर' में लोहा ही बना रहता है । (पर, हाँ) यदि गुरु-पारस मिल जाए (तो लोहे जैसा निकम्मा बन चुका उसका मन) सोना हो जाता है (फिर वह इतने ऊँचे जीवन वाला हो जाता है कि उसका) मूल्य नहीं पाया जा सकता ।

हरि मंदर मह हरि वसै - सरब निरंतर सोइ । नानक गुरमुख वणजीऐ - सचा सउदा होइ । (श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी - 1346)

अर्थः- हे भाई ! इस शरीर - 'हरि-मन्दिर' में परमात्मा स्वयं बसता है, वह परमात्मा सब जीवों में ही एक-रस बस रहा है । हे नानक ! सरब-निवासी प्रभु के नाम का सौदा गुरु के द्वारा ही किया जा सकता है (वणज किया जा सकता है) । यह सौदा सदा कायम रहने वाला सौदा है।

2. गिआन न गलीई ढूढीऐ - कथना करड़ा सार । करम मिलै ता पाईऐ - होर हिकमत हुकम खुआर । (श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी - 464)

अर्थः- ज्ञान केवल शब्दों से नहीं मिलता । इसे समझाना लोहे के समान कठोर है । जब भगवान कृपा करते हैं, तभी वह प्राप्त होता है, अन्य युक्तियां और आदेश व्यर्थ हैं ।

a. महल मह बैठे अगम अपार । भीतर अम्रित सोई जन पावै - जिस गुर का सबद रतन आचार ।

अर्थ:- अगम्य (पहुँच से परे) और बेअंत प्रभु जी हरेक शरीर में बैठे हुए हैं (मौजूद हैं), पर वही मनुष्य प्रभु जी का नाम-अमृत हासिल करता है जिसकी नित्य की क्रिया गुरु का श्रेष्ठ शब्द (अपने अंदर बसाना) हो जाए ।

काइआ महल मंदर घर हरि का - तिस मह राखी जोत अपार । नानक गुरमुख महल बुलाईऐ - हरि मेले मेलणहार । (श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी - 1256)

अर्थ:- यह मनुष्य शरीर परमात्मा का महल है परमात्मा का मंदिर है परमात्मा का घर है, बेअंत परमात्मा ने इसमें अपनी ज्योति टिका रखी है । (जीव अपने हृदय-महल में बसते प्रभु को छोड़ के बाहर भटकता फिरता है) हे नानक ! (बाहर भटकता जीव) गुरु के द्वारा ही हृदय-महल में मोड़ के लाया जा सकता है, और तब ही मिलाने का समर्थ प्रभु उसको अपने चरणों में जोड़ लेता है ।

b. नउ दर ठाके धावत रहाए । दसवै निज घर वासा पाए ।

ओथै अनहद सबद वजह दिन राती - गुरमती सबद सुणावणिआ । (श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी - 124)

अर्थ:- जिस मनुष्य ने अपने नौ दरवाजे (नौ गोलकें) (विकारों के प्रभाव की ओर से) बंद कर लिए हैं, जिस ने (विकारों की

ओर) दौड़ता अपना मन काबू कर लिया है । उसने अपने चित्त आकाश के द्वारा (अपनी ऊँची हुई अक़्ल के द्वारा) अपने असल घर में (प्रभु चरणों में) निवास प्राप्त कर लिया है । उस अवस्था में पहुँचे मनुष्य के अंदर (हृदय में) सदा एक रस परमात्माकी महिमा के बोल अपना प्रभाव डाले रखते हैं। वह दिन रात अपने गुरु की मति पर चल के महिमा की वाणी को ही अपनी तवज्जो में टिकाए रखता है ।

बिन सबदै अंतर आनेरा । न वसत लहै न चूकै फेरा । सतिगुर हथ कुंजी होरत दर खुलै नाही - गुरु पूरै भाग मिलावणिआ ।

अर्थ:- गुरु के शब्द के बिना मनुष्य के हृदय में माया के मोह का अंधकार बना रहता है । जिसके कारण उसे अपने अंदरनाम पदार्थ नहीं मिलता और उसके जनम मरन का चक्कर बना रहता है । (मोह के बज्र किवाड़ खोलने की) कुँजी गुरु के हाथ में ही है । किसी और तरीके से वह दरवाजा नहीं खुलता। और, गुरु भी बहुत किस्मत से ही मिलता है ।

३. रामदास सरोवर नाते । सभ उतरे पाप कमाते । निरमल होए कर इसनाना । गुर पूरै कीने दाना ।

अर्थ:- हे भाई ! जो मनुष्य राम के दासों के सरोवर में (साधु-संगत में नाम-अमृत से) स्नान करते हैं, उनके (पिछले) किए हुए पाप उतर जाते हैं । (हरि नाम जल से) स्नान करके वे पवित्र जीवन वाले हो जाते हैं। पर ये कृपा पूरे गुरु ने ही की हुई होती है ।

सभ कुसल खेम प्रभ धारे । सही सलामत सभ थोक उबारे - गुर का सबद वीचारे ।

अर्थ:- हे भाई ! जिस मनुष्य ने गुरु के शब्द को अपनी सोच मंडल में टिका के आत्मिक जीवन के सारे गुण (विकारों के जाल में फसने से) ठीक ठाक बचा लिए, प्रभु ने (उसके हृदय में) सारे आत्मिक सुख आनंद पैदा कर दिए ।

साधसंग मल लाथी । पारब्रहम भइओ साथी । नानक नाम धिआइआ । आद पुरख प्रभ पाइआ । (श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी - 625)

अर्थ:- हे भाई ! साधु-संगत में (टिकने से) विकारों की मैल दूर हो जाती है, (साधु-संगत की इनायत से) परमात्मा मददगार बन जाता है । हे नानक ! (जिस मनुष्य ने रामदास सरोवर - राम के दासों के सरोवर में, साधु-संगत में जहाँ नाम जल का प्रवाह चलता है - में आ के) परमात्मा का नाम स्मरण किया, उसने उस प्रभु को पा लिया जो सबका आदि है और सर्व-व्यापक है ।

४. प्रभ हरिमंदर सोहणा - तिस मह माणक लाल । मोती हीरा निरमला - कंचन कोट रीसाल । बिन पउड़ी गड़ किउ चड़उ - गुर हरि धिआन निहाल ।

अर्थ:- हरि प्रमात्मा (मानों) एक खूबसूरत सा मन्दिर है जिसमें माणक लाल मोती व चमकते हीरे हैं (जिसके चारों तरफ) सोने के सुन्दर किले हैं । पर उस (मंदिर) किले पर सीढ़ी के बिना चढ़ा नही जा सकता । हाँ, यदि गुरु चरणों का ध्यान धरा जाए, जो प्रभु चरणों का ध्यान धरा जाए, तो दर्शन हो जाता है ।

गुणवंती गुण वीथरै – अउगुणवंती झूर । जे लोड़ह वर कामणी – नह मिलीऐ पिर कूर । ना बेड़ी ना तुलहड़ा – ना पाईऐ पिर दूर ।

अर्थ:- जिस जीव-स्त्री ने अपने हृदय में प्रभु की महिमा बसाई हुई है वह प्रभु के गुणों की ही कथा वारता करती है । पर, जिसके अंदर (माया के मोह के कारण) औगुण ही औगुण हैं वह (अपने ही औगुणों के प्रभाव से) सदा चिंतातुर रहती है । हे जीव-स्त्री ! तू प्रभु पति को मिलना चाहती है, तो (याद रख कि) झूठे मोह में फसे रहने से प्रभु-पति को नहीं मिल सकती। (तू तो मोह के समुंदर में गोते खा रही है) तेरे पास ना बेड़ी (नाव) है ना तुलहा है, इस तरह प्रभु पति नहीं मिल सकता, (क्योंकि) वह तो (इस संसार समुंदर से पार है) दूर है ।

मेरे ठाकुर पूरै तखत अडोल । गुरमुख पूरा जे करे पाईऐ साच अतोल ।

अर्थ:- मेरे पालनहार प्रभु का अहिल ठिकाना उस तख्त पर है जो (प्रभु की तरह ही) संपूर्ण है (जिसमें कोई कमी नहीं है) । वह प्रभु सदा स्थिर रहने वाला है, उसका तौल माप बताया नहीं जा सकता । पूरा गुरु यदि मेहर करे, तोही वह मिल सकता है ।

गुर पउड़ी बेड़ी गुरू – गुर तुलहा हरि नाउ । गुर सर सागर बोहिथो – गुर तीरथ दरीआउ । जे तिस भावै ऊजली – सत सर नावण जाउ ।

अर्थः- उस (हरि मंदिर किले के ऊपर चढ़ने के लिए) गुरु सीढ़ी है । (इस संसार समुंदर से पार लांघने के वास्ते) गुरु नाव है, प्रभु का नाम (देने वाला) गुरु तुलहा है । गुरु सरोवर है, गुरु समुंदर है, गुरु ही जहाज है, गुरु ही तीर्थ है, और दरिया है । यदि प्रभु की रजा हो, तो (गुरु को मिल के) मनुष्य की बुद्धि शुद्ध हो जाती है । (क्योंकि) मनुष्य साधु-संगत सरोवर में (मानसिक) स्नान करने जाने लग पड़ता है ।

पूरो पूरो आखीऐ - पूरै तखत निवास । पूरै थान सुहावणै - पूरै आस निरास । नानक पूरा जे मिलै - किउ घाटै गुण तास । (श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी - 17)

अर्थः- हर कोई कहता है कि परमात्मा में कोई कमी नही है, उसका निवास भी ऐसे तख्त पर है जिसमें कोई कमी नहीं है । वह पूरा प्रभु सुंदर कमी रहित जगह पर बैठा है और टूटे दिल वालों की उम्मीदें पूरी करता है । हे नानक ! वह पूर्ण प्रभु अगर मनुष्य को मिल जाए तो उसके गुणों में भी कैसे कोई कमी आ सकती है.....?

5. दह दिस खोजत हम फिरे मेरे लाल जीउ - हरि पाइअड़ा घर आए राम । हरि मंदर हरि जीउ साजिआ मेरे लाल जीउ - हरि तिस मह रहिआ समाए राम ।

अर्थः- हे मेरे प्यारे ! परमात्मा को ढूँढने के लिए हम दसों दिशाओं में तलाश करते फिरे, पर उस परमात्मा को अब हृदय घर में ही आ के ढूँढ लिया है । हे मेरे प्यारे ! इस मनुष्य शरीर को परमात्मा ने अपना निवास स्थान बनाया हुआ है, परमात्मा इस (शरीर घर) में टिका रहता है।

सरबे समाणा आप सुआमी - गुरमुख परगट होइआ । मिटिआ अधेरा दूख नाठा - अमिउ हरि रस चोइआ ।

अर्थः- मालिक प्रभु स्वयं ही सारे जीवों में व्यापक हो रहा है, पर उसके इस अस्तित्व की समझ गुरु की शरण पड़ने से ही आती है । (गुरु जिस मनुष्य के मुँह में) आत्मिक जीवन देने वाला नाम जल नाम-रस चोआ देता है, (उसके अंदर से माया के मोह का) अंधकार मिट जाता है, उसका सारा दुख दूर हो जाता है ।

जहा देखा तहा सुआमी - पारब्रहम सभ ठाए । जन कहै नानक सतिगुर मिलाइआ - हरि पाइअड़ा घर आए । (श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी - 542)

अर्थः- गुरु की कृपा से अब मैं जिधर देखता हूँ उधर ही मुझे मालिक परमात्मा हर जगह बसता दिखाई देता है । दास नानक कहता है: गुरु ने मुझे परमात्मा मिला दिया है, मैंने परमात्मा को अपने हृदय-घर में ढूँढ लिया है ।

6. हरि जपे हरि मंदर साजिआ - संत भगत गुण गावह राम । सिमर-सिमर सुआमी प्रभ अपना - सगले पाप तजावह राम।

अर्थः- हे भाई ! मनुष्य का ये शरीर-घर परमात्मा ने नाम जपने के लिए बनाया है, (इस घर में) संत जन भक्त जन (परमात्मा के)

गुण गाते रहते हैं । अपने मालिक प्रभु (का नाम) हर वक्त स्मरण कर-कर के (संत जन अपने अंदर से) सारे पाप दूर कर लेते हैं ।

हरि गुण गाइ परम पद पाइआ – प्रभ की ऊतम बाणी । सहज कथा प्रभ की अत मीठी – कथी अकथ कहाणी ।

अर्थः- हे भाई ! (इस शरीर घर में संत-जनों ने) परमात्मा की पवित्र महिमा की वाणी गा के, परमात्मा के गुण गा के सबसे उच्च आत्मिक दर्जा प्राप्त किया है । (इस शरीर-घर में संत-जनों ने) उस परमात्मा की महिमा की है जिसका सही स्वरूप बयान नहीं किया जा सकता, उस प्रभु की अत्यंत मीठी महिमा की है जो आत्मिक अडोलता पैदा करती है ।

भला संजोग मूरत पल साचा – अबिचल नीव रखाई । जन नानक प्रभ भए दइआला – सरब कला बण आई । (श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी – 781)

अर्थः- हे दास नानक ! जिस मनुष्य पर प्रभु जी दयावान होते हैं (उसके शरीर-घर में वह) शुभ संजोग आ बनता है, वह सदा कायम रहने वाला महूरत आ बनता है जब (परमात्मा के महिमा करने की) कभी ना हिलने वाली नींव रखी जाती है (और, जिस के अंदर ये नींव रखी जाती है, उसके अंदर) मजबूत आत्मिक शक्ति पैदा हो जाती है ।

7. हरि मंदर सोई आखीऐ – जिथहु हरि जाता । मानस देह गुर बचनी पाइआ – सभ आतम राम पछाता ।

अर्थ:- (वैसे तो सारे शरीर ही 'हरि मंदरु' अर्थात, ईश्वर के रहने की जगह हैं, पर असल में) वही शरीर 'हरि मंदरु' कहा जाना चाहिए जिसमें ईश्वर पहचाना जाए; (सो, मनुष्य का शरीर 'हरि मंदरु' है, क्योंकि) मनुष्य-शरीर में गुरु के हुक्म में चल के ईश्वर को पा सकता है, हर जगह व्यापक ज्योति दिखती है ।

बाहर मूल न खोजीऐ – घर माह बिधाता । मनमुख हरि मंदर की सार न जाणनी – तिनी जनम गवाता ।

अर्थ:- (शरीर से) बाहर तलाशने की बिल्कुल ही आवश्यक्ता नहीं, इस शरीर-घर में ही विधाता बस रहा है। पर मन के पीछे चलने वाले बंदे (इस मनुष्य-शरीर) 'हरि मंदरु' की कद्र नहीं जानते, वे मानव जन्म (मन के पीछे चल के ही) गवा जाते हैं ।

सभ मह इक वरतदा – गुर सबदी पाइआ जाई ।(श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी - 953)

अर्थ:- (वैसे तो) सभी में एक ही प्रभु व्यापक है, पर मिलता है गुरु के शब्द से ही ।

8. काइआ हरि मंदर हरि आप सवारे । तिस विच हरि जीउ वसै मुरारे । गुर कै सबद वणजन वापारी नदरी आप मिलाइदा । (श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी - 1059)

अर्थ:- हे भाई ! ये मनुष्य का शरीर परमात्मा का (पवित्र) घर है, परमात्मा इसको खुद ही सुंदर बनाता है, इसमें विचार-दैत्यों को मारने वाला प्रभु स्वयं बसता है । हे भाई ! जो जीव वणजारे (इस शरीर

में) गुरु के शब्द से हरि-नाम का वणज करते हैं, प्रभु मेहर की निगाह से उनको (अपने साथ) मिला लेता है ।

९. हरि मंदर हरि साजिआ - हरि वसै जिस नाल । गुरमती हरि पाइआ - माइआ मोह परजाल ।

अर्थः- हे भाई ! मनुष्य का ये शरीर-हरि-मन्दिर परमात्मा ने (खुद) बनाया है, इस शरीर-हरि मदिर में परमात्मा स्वयं बसता है । (पर) गुरु की मति पर चल कर (अंदर से) माया का मोह अच्छी तरह जला के ही, किसी भाग्यशाली को अंदर बसता परमात्मा मिला है ।

हरि मंदर वसत अनेक है - नव निध नाम समाल ।

अर्थः- हे भाई ! परमात्मा का नाम, मानो, नौ खजाने हैं (इसको हृदय में) संभाल के रख (अगर हरि-नाम संभाला जाए, तो) इस शरीर हरि मन्दिर में अनेक ही उत्तम कीमती गुण (मिल जाते) हैं ।

धन भगवंती नानका - जिना गुरमुख लधा हरि भाल । वडभागी गड़ मंदर खोजिआ - हरि हिरदै पाइआ नाल । (श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी - 1418)

अर्थः- हे नानक ! साबाश है उन भाग्यशालियों को, जिन्होंने गुरु की शरण पड़ कर इस शरीर रूपी हरिमन्दिर में बस ते परमात्मा को खोज के पा लिया है । जिस बड़े भाग्यशालियों ने इस शरीर किले को शरीर मन्दिर को खोजा, दिल में ही अपने साथ बसता परमात्मा पा लिया ।

(पाठी माँ साहिबा)

ऐक शब्द

उपरोक्त अर्थों में कहे गये गुरू-सतगुरू-शबद-नाम-सच्चा नाम इत्यादि विशेष - विशेषो का केवल और केवल ऐक ही अर्थ विशेष है कि - "रागमई प्रकाशित सुगंधित आवाज़ विशेष" । इसके आलावा सारे अर्थ केवल मनमत हैं - गुरूमत का इससे कोई संबंध विशेष नंही हैं ।

"सबद गुरू - सुरत धुन चेला । गुण गोबिंद - नाम धुन बाणी ।"